आमिना आगे थी, झिड़की से कुछ सहम गयी। फिर कुछ साहस बटोर कर चढ़ने लगी और बोली, 'बहिन, हम नीचे ही बैठ जायेंगे—मुसीबत में हैं....'

'मुसीबत का हम ने ठेका लिया है ? जाओ, आगे देखो....'

जमीला ने कहा, 'इतनी तेज़ क्यों होती हो बहिन ? आख़िर हमें भी तो जाना है।'

'जाना है तो जाओ, थई में जगह देखो। बड़ी आयीं हमें सिखानेवाली !' और कहनेवाली ने बच्चे को सीट पर धम्म से बिठा कर, उठ कर भीतर की चिटकनी भी चढ़ा दी।

जमीला को बुरा लगा। बोली, 'इतना गुमान ठीक नहीं है, बहिन ! हम भी तो मुसलमान हैं....'

इस पर गाड़ी के भीतर की चारों सवारियों ने गरम होकर एक साथ बोलना शुरू कर दिया। उस से अभिप्राय कुछ अधिक स्पष्ट हुआ हो सो तो नहीं, पर इतना जमीला की समझ में आया कि वह बढ़-बढ़ कर बात न करे, नहीं तो गार्ड को बुला लिया जायेगा।

सकीना ने कहा, 'तो बुला लो न गार्ड को ! आख़िर हमें भी कहीं बिठायेंगे।'

'ज़रूर बिठायेंगे, जाके कहो न ! कह दिया कि यह स्पेशल है स्पेशल, ऐरे-गैरों के लिए नहीं है, पर कम्बख़्त क्या खोपड़ी है कि....' एकाएक बाहर झाँक कर बग़ल के डिब्बे की ओर मुड़ कर, 'भैया ! ओ अमजद भैया ! देखो ज़रा, इन लोगों ने परेशान कर रखा है....'

'अमजद भैया' चौड़ी धारी के सात के कपड़ों में लपकते हुए आये। चेहरे पर बरसों की अफ़सरी की चिकनी पपड़ी, आते ही दरवाज़े से आमिना को ठेलते हुए बोले, 'क्या है ?'

'देखो न इनने तंग कर रखा है। कह दिया जगह नहीं है। पर यहीं घुसने पर तुली हुई हैं। कहा कि स्पेशल है, सेकंड है, पर सुनें तब न। और यह अगली तो....'

'क्यों जी, तुम लोग जातीं क्यों नहीं ? यहाँ जगह नहीं मिल सकती। कुछ अपनी हैसियत भी तो देखनी चाहिए....'

जमीला ने कहा, 'क्यों, हमारी हैसियत को क्या हुआ है ? हमारे घर के ईमान की कमाई खाते हैं। हम मुसलमान हैं, पाकिस्तान जाना चाहते हैं और....'

'और टिकट ?'

'और मामूली ट्रेन में क्यों नहीं जातीं ?'

आमिना ने कहा, 'मुसीबत के वक़्त मदद न करे, तो कम से कम और तो न सताए ! हमें स्पेशल ट्रेन से क्या मतलब ?—हम तो यहाँ से जाना चाहते हैं जैसे भी हो। इस्लाम में तो सब बराबर हैं। इतना ग़रूर—या अल्लाह !'

'अच्छा, रहने दे। बराबरी करने चली है। मेरी जूतियों की बराबरी की है तैने ?'

गाड़ी ने सीटी दी।

किवाड़ की एक तरफ़ का हैंडल पकड़ कर जमीला चढ़ी कि भीतर से हाथ डालकर चिटकनी खोले, दूसरी तरफ़ का हैंडल पकड़ कर अमजद मियाँ चढ़े कि उसे ठेल दें। जिधर जमीला थी, उधर ही सकीना ने भी हैंडल पकड़ा था।

भीतर से आवाज़ आई, 'ख़बरदार, हाथ बढ़ाया तो, बेशर्मो ! हया-शर्म छू नहीं गई इन निगोड़ियों को....'

सकीना ने तड़प कर कहा, 'कुछ तो ख़ुदा का खौफ़ करो ! हम ग़रीब सही, पर कोई गुनाह तो नहीं किया....'

'बड़ी पाकदामन बनती हो ! अरे, हिन्दुओं के बीच में रहीं, और अब उन के बीच से भाग कर जा रही हो, आख़िर कैसे ? उन्होंने क्या योंही छोड़ दिया होगा ? सौ-सौ हिन्दुओं से ऐसी-तैसी करा के पल्ला झाड़ के चली आई पाकदामनी का दम भरने....'

जमीला ने हैंडल ऐसे छोड़ दिया मानो गरम लोहा हो। सकीना से बोली, 'छोड़ो बहिन, हटो पीछे यहाँ से !'

सकीना ने उतर कर माथा पकड़ कर कहा, 'या अल्लाह !'

गाड़ी चल दी। अमजद मियाँ लपक कर अपने डिब्बे में चढ़ गये।

जमीला थोड़ी देर सन्न-सी खड़ी रही। फिर उस ने कुछ बोलना चाहा, आवाज़ न निकली। तब उस ने ओंठ गोल कर के ट्रेन की ओर को कहा, 'थू: !' और क्षण-भर बाद फिर 'थू: !'

आमिना ने बड़ी लम्बी साँस लेकर कहा, 'गई पाकिस्तान स्पेशल। या परवर्दिगार !'